BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

B A Part II History (Subsidiary)

Q. बक्सर युद्ध के कारणों एवं परिणामों का वर्णन करें।

Ans — मीरकासिम अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा सम्राट शाह आलम से संधि कर बंगाल पर अधिकार के लिए पटना पहुँचा। सम्मिलित सेना के आगमन की सूचना पाकर अंगरेजी सेना का प्रधान कार्नेक घबरा गया। शुजाउद्दौला के सैनिकों की संख्या डेढ़ लाख थी जिसमें 40 हजार लड़ाई के योग्य थे। सम्राट शाह आलम और मीरकासिम के पास अपनी कोई सेना नहीं थी। कार्नेक ने बक्सर के बदले पटना लौटने का संदेश अंगरेज सेना को दिया और पटना की घेराबन्दी की गयी। परन्तु शुजाउद्दौला की सेना में अनेक विश्वासघाती व्यक्ति थे। उदाहरण के लिए, सिताब राय का पुत्र महाराजा कल्याण सिंह अवध की सेना में एक ऊँचे पद पर था और अंगरेजों का मित्र था और उसका मुंशी साधोराम शुजाउद्दौला की सैनिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर अंगरेजों को भेज देता था। जैनुल आबदीन भी अंग्रेजों से पत्राचार कर रहा था। पटना की घेराबन्दी नहीं हुई, बरसात का मौसम था अतः पटना के बदले शुजाउद्दौला ने बक्सर में ही बरसात बिताने का निश्चय किया।

इस बीच कार्नेक के बदले हेक्टर मुनरो को अंगरेजों ने सेनापति नियुक्त कर पटना भेजा, वह जुलाई 1764 ई० में पटना पहुँचा। उसे डर था कि देर होने पर मराठों एवं अफगानों का सहयोग पाकर शुजाउद्दौला अंगरेजों को पराजित कर सकता है अतः मुनरो ने तुरन्त युद्ध का निर्णय लिया।

मुनरो के आने के बाद कुछ भारतीय सैनिकों ने विद्रोह किया किन्तु मुनरो ने उन्हें जीत कर दिया और सभी विद्रोहियों को तोप से उड़ा दिया। मुनरो ने ~~[illegible]~~ रोहतास के किलेदार साहूमल को प्रलोभन देकर अपने पक्ष में मिला लिया और रोहतास पर अंगरेजों का अधिकार हो गया।

मुनरो सेना नदी पार कर बक्सर
23 अक्टूबर 1764 ई० को अंगरेज और तथाकथित तीन शक्तियों की सम्मिलित सेना के बीच युद्ध शुरु हुआ। शुजाउद्दौला ने प्रतिदिन सैनिक खर्च के नाम पर 11 लाख रुपये की माँग की, परन्तु उतनी रकम देने नहीं करने पर वह मीरकासिम से असन्तुष्ट हो गया। शुजाउद्दौला ने मीरकासिम की सारी सम्पत्ति छीन ली। क्योंकि वह स्वयं बिहार पर अधिकार करना चाहता था, इसलिए अंगरेजों के हाथ मीरकासिम को सौंपने के बदले मोहरे के रूप में उसका प्रयोग करना चाहता था।

दूसरी ओर सम्राट शाह आलम के पास अपनी कोई सेना नहीं थी और वह स्वयं दिल्ली की गद्दी पाने के लिए सहायता चाहता था तथा अंगरेजों का आश्वासन पाकर युद्ध के प्रति उदासीन हो चुका था। ऐसी परिस्थिति में बक्सर का युद्ध सुबह 9 बजे से आरंभ हुआ और दोपहर 12 बजे के पहले ही समाप्त हो गया था। युद्ध में अचंकन गोलाबारी हुई। शुजाउद्दौला की सेना भीड़ के समान थी। अंगरेजी तोपों के सामने अव्यवस्थित घुड़सवार फौज कोई काम नहीं कर सकी और अंगरेज विजयी हो गए। दोनों पक्षों की ओर से काफी सेना मारी गई किन्तु नवाब की सेना में मरनेवालों की संख्या अधिक थी। शुजाउद्दौला को अपनी सेना पीछे हटा लेनी पड़ी।

बक्सर युद्ध की पराजय के बाद सम्राट शाह-आलम ने अंगरेजी सेना के साथ डेरा डाला। अंगरेजों ने बादशाह का स्वागत किया और शुजाउद्दौला के दीवान राजा बेनीबहादुर के माध्यम से शुजाउद्दौला से संधि करनी चाही परन्तु शुजाउद्दौला ने संधि की बात अस्वीकार कर दी। अतः नवाब शुजाउद्दौला और अंगरेजों के बीच चुनार तथा कड़ा (इलाहाबाद) के पास युद्ध हुआ। शुजाउद्दौला को युद्ध में पराजित हो कर अंग्रेजों के साथ

संधि करनी पड़ी। अंगरेजों और शुजाउद्दौला के बीच संधि करने में राजा सितावराय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। शुजाउद्दौला को 60 लाख रुपये क्षतिपूर्ति के रूप में अंगरेजों को देने पड़े। इलाहाबाद का किला और कड़ा का क्षेत्र मुगल बादशाह शाहआलम के लिए छोड़ देने पड़े। गाजीपुर और पड़ोस का क्षेत्र अंगरेजों को देना पड़ा।

इस प्रकार मीरकासिम का स्वपन चकनाचूर हो गया। सम्पति छीन जाने के साथ साथ शुजाउद्दौला ने उसे अपमानित भी किया। मीरकासिम दिल्ली चला गया जहाँ शरणार्थी के रूप में अपना शेष जीवन अत्यन्त कठिनाई से व्यतीत किया।

बक्सर युद्ध के परिणाम – भारत के निर्णायक युद्धों में बक्सर युद्ध का परिणाम अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। बक्सर का युद्ध बंगाल में तीसरी क्रांति का प्रतीक था। पहली क्रांति प्लासी के युद्ध से आरंभ हुई और 1760 ई० में मीरजाफर को हटा कर मीरकासिम को नवाब बनाने के साथ दूसरी क्रान्ति पुरी हुई। बंगाल में जो नाटक खेला जा रहा था उसके तृतीय एवं अंतिम दृश्य का पटाक्षेप बक्सर युद्ध के रूप में हुआ।

बंगाल पर अंगरेजों का वास्तविक रूप से अधिकार हो गया और उत्तर भारत की राजनीति पर उनका प्रभाव बढ़ गया। बक्सर युद्ध में अवध के नवाब शुजाउद्दौला की पराजय से उत्तर भारत में कोई दूसरी शक्ति नहीं रही जो अंगरेजों का विरोध कर सकती।

अब शुजाउद्दौला ने अंगरेजों से मित्रता कर ली और दिल्ली का सम्राट शाहआलम बंगाल के नवाब की तरह अंगरेजों की सैनिक सहायता पर निर्भर रहने लगा।

शाहआलम अंगरेजों का वास्तविक अधिकार बंगाल और बिहार में स्वीकार करने को तैयार था। मुगल सम्राट नाममात्र का अपना अधिकार सुरक्षित रखकर अंगरेजों से किसी प्रकार का समझौता करना चाहता था।

बंगाल के नवाब के अधिकार को समाप्त कर दिया गया और सीमित संख्या में सेना रखने की इजाजत दी गई ताकि भविष्य में वह मीरकासिम की तरह अंगरेजों का विरोध ना कर सके। इतना ही नहीं अब बंगाल के नवाब के यहाँ एक अंगरेज प्रतिनिधि रहने लगा ताकि अंगरेजों के खिलाफ षड्यंत्र न रच सके।

बक्सर युद्ध में अंगरेजों को जितनी हानि उठानी पड़ी उसकी क्षतिपूर्ति मीरजाफर को करनी पड़ी। इस प्रकार बंगाल का नवाब मीरजाफर, अवध का नवाब शुजाउद्दौला और दिल्ली सम्राट शाहआलम तीनों अंगरेजों की दया पर निर्भर थे। स्वाभाविक रूप से बक्सर युद्ध के बाद भारतीय राजनीति में अंगरेजों के प्रभुत्व एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिल जाने से अंगरेजों की माली हालत अच्छी हो गई उत्तर भारत में सत्ता का द्वार खुल गया। मराठों से साथ संघर्ष करने को अंगरेज तत्पर हो गए और अततः भारत विजय करने में वे सफल रहे।

डॉ० सरकार और दत्त के अनुसार- "प्लासी की युद्ध की अपेक्षा बक्सर के युद्ध का परिणाम अधिक निर्णायक सिद्ध हुआ"

आर्थिक दृष्टि से ईस्ट इण्डिया कम्पनी को 1765ई में बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी बक्सर युद्ध के फलस्वरूप ही मिली। दीवानी प्राप्त कर अंगरेजों ने बंगाल और बिहार को लूटना शुरू कर दिया और दोहरे शासन की मार से बंगाल प्रांत की लगान व्यवस्था, उद्योग-धंधे एवं

व्यापार को हानि पहुँची। नवाब नाम मात्र का शासक रह गया, उसके हाथ में केवल फौजदारी, न्याय और पुलिस व्यवस्था थी। बंगाल की आय पर अंग्रेजों के एकाधिकार ने ही भविष्य में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना का रास्ता प्रशस्त कर दिया।

— X —